# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष-13, अंक-2<br>शुक्रवार, 26 फर.' 90 | सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी | वार्षिक चन्दा-10.00<br>प्रति अंक : 1.00 |


## माहात्म्यसम्राट प.पू. साहेब का स्वर्णजयंती महोत्सव

गुणातीत पीढ़ी के वारिसदारों में खूब जाना पहचाना नाम-'पू. साहेब'...पू. साहेब का नाम आते ही एक निर्दोष व पवित्र खिलखिलाता हुआ मुख आँखो के सामने आ जाता है। जिस-जिस ने भी पू. साहेब का एक बार भी दर्शन किया है, वह उनकी ब्रह्मरस में डूबी आंखो, उनके निर्दोष हास्य को कभी भी भूला नहीं पायेगा... उनका दर्शन करते ही मन, वाणी, विचार, अन्तर के सकल्प परम शान्ति का अनुभव करते है..

पृथ्वी पर अनंत जीवों का कल्याण करने गुरुहरि योगीजी महाराज प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामी, पू. साहेब जैसे कोहिनूर हीरों की धरती पर आदर्श स्थापित करने अक्षरधाम से ही साथ में लाये थे। 1965 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने 'युवकों मेरा हृदय है...' यूँ कहकर संकल्प किया-'मुझे युवकों द्वारा भी कल्याण की राह खुली करनी है...'। बापा के इस संकल्प को साकार करने पू. साहेब सर्वस्व को याहोम करके कूदे व युवकों की सेना के सेनापति बने। प.पू. योगीजी महाराज ने कहा था-'जशभाई (साहेब) अस्सी ब्रह्मविद्या प्राप्त करे हुए राहबरों के महारथी है' आज योगीजी महाराज की वह वाणी साकार दिखाई पड़ती है। पू. साहेब जब से गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध में आये तब से मन, कर्म, वचन से प्रभु के स्वरुप में लय व लीन हो गये... बापा का हर वचन अध्धर झेला... बापा की आज्ञा यानि-'सर्वोपरि'... मन, बुद्धि से पर का विश्वास व एक धारी दृढ़ निष्ठा...प.पू. काकाजी से भी हमने कई बार सुना है-'साहेब यानि-ठरावरहित .....गुरुमुखी।' पू. साहेब को गुरुहरि योगीजी महाराज ने भगवा कपड़े न देकर युवकों की एक नई जिम्मेदारी सौंपी... और आज करीब 200 व्रतधारी युवकों का विशाल समूह 'अनुपम मिशन' के रूप से विद्या नगर में निष्काम कर्मयोग की साधना करता हुआ अपने पूर्ण विकसित रुप में दिखाई देता है। पू. साहेब के साथ पू. अश्विनभाई, पू. शांतिभाई, पू. सनतभाई, Dr. V.S, पू. हर्षदभाई, पू. पूनमभाई, पू. बेरीस्टर जैसे युवकों को देखकर हृदय अपने आप झुक जाता है। अब तक समाज केवल भगवा कपड़े में ही प्रभु की प्रभुता होने का विश्वास रखता था, परन्तु गुरुहरि योगीजी महाराज के इस क्रान्तिकारी कदम से व इन भाईयों के वर्तन से यह सिद्ध हो गया कि अगर अन्तर

भगवा हो तो प्रभु की प्राप्ति में, उसे प्रगटाने में कोई संदेह नहीं।

शुरूआत से ही पू. साहेब के जीवन में कोई नया दर्शन होता था। पू. साहेब खूब बुद्धिशाली भी हैं, शक्तिशाली-प्रतिभाशाली भी हैं, सच्ची सूझवाले भी हैं पर तब भी सहज समर्पण.....कभी भी किसी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ, प्रसंग का भार नहीं.....केवल चातक की तरह एक दृष्टि–बस, योगीजी महाराज राजी हों.....पुराने कई प्रसंगों से पता चलता है कि गुरुहरि योगीजी महाराज स्वयं पू. साहेब के दर्शन करने उतावले रहते थे....पू. साहेब की diary में No शब्द ही नहीं....केवल तूं ही तूं ही....केवल Perfect posititive thinking....विपरीत परिस्थितियों और विपरीत प्रकृति वाले भक्तों के बीच पू. साहेब हंसते ही मुख से खड़े दिखाई पड़ेंगे....खूब ज्वार-भाटे उतार चढ़ाव आये....लेकिन एकदम स्थितप्रज्ञ.....बस मूर्ति की मस्ती.....

पू. साहेब यानि सरलता का मूर्तस्वरूप। उनकी वाणी में जोश व महिमा। उनकी बलभरी वाणी सुनते ही हरेक में कुछ करने की उमंग, नया जोश, उत्साह उत्पन्न होता है। संबंध में आने वाले हरेक का केवल गुण देखना.....भक्तों केवल ब्रह्म की मूर्ति....केवल महिमा.....प.पू. काकाजी के मुख से एक बार यह शब्द निकले थे कि ब्रह्मज्योति (पू. साहेब का निवास स्थान) के पेड़-पौधे व धूल-मिट्टी भी स्वामिनारायण-स्वामिनारायण बोलती है, महिमा की बातें करती है... पू. साहेब हरेक के साथ उसकी ही कक्षा पर आकर बच्चों के साथ बच्चे बनकर एकदम अस्तित्वरहित, आत्मीय व विनम्र ही बनकर रहते हैं।

पू. साहेब का जीवन जो भी नजदीक से निहारता है उसके मुख से सहज निकलता है–साहेब–एकदम खूब स्वाभाविक.... natural! बनावट दिखावा, अभिमान कभी भी पू. साहेब के जीवन में किसी ने नहीं देखा....अभाव, अवगुण, भावफेर की या निर्बलता की बात ही नहीं...करेंगे या मरेंगे की ही एक अदा पू. साहेब के जीवन में बहती दिखाई पड़ती है। विचार वाणी वर्तन में...व पल-पल गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, पू.बा. की मर्जी के मुताबिक जीकर उनकी शोभा बढ़ाई और आज तो हम सब के लिये वे स्वयं प्रभु की मूर्तिरूप बने हैं। पू. साहेब का जीवन गृही-त्यागी सभी के लिये आदर्शरूप है.....उनके वर्तन से सहज ही प्रेरणा मिलती है।

पू. साहेब की स्वर्ण जयंती मनाने का मंगल अवसर नजदीक आ रहा है.....हम सब प्रार्थना करें....हे साहेब ! हमें ऐसा बल दो कि हम भी आपके गुण पायें–हांसील करना हमारे बस का नहीं, पर आप आशीष दो कि वे हमें बक्षीश मिल जायें.....सरलता, महिमा व प्राप्ति की मस्ती हमारे जीवन का आधार बने....अन्तर के भाव से सब संबंध वालों को जीवनमुक्त मानकर उनके गुण गाते हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का अखंडित आनंद आप जो भोग रहे हो–वे हमें भी प्राप्त हो.....

××××

# मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

प्रगट की भक्ति का अति उत्तम लक्षण है–प्रगट मूर्ति के अखंड और अविरत संबंध से ही कृत-कृत्यता (धन्यता) मानना। वही भक्त की सिद्धि है, वही एकांतिकी भक्ति है और वही आत्यंतिक मुक्ति है। ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म परमात्मा की सेवा में अखंड रहना–वही मुक्ति !

स्वामिश्री तो स्वयं अनादि ब्रह्म थे, परन्तु पृथ्वी पर एकांतिकी भक्ति का (प्रगट मूर्ति के अखंड अनुसंधान का) अति उच्चतम आदर्श स्थापित करने महाराज के साथ उनका पृथ्वी पर अवतरण था। स्वामिश्री के प्रसंगों को निहारेंगे और उनके दिखाये मार्ग पर चलेंगे तो ही आत्यंतिक मुक्ति की राह सरल होगी।

महाराज गढ़डा से संतों व काठी भक्तों के साथ विचरण में निकले थे. रास्ते में गाँव आया। वहाँ के हरिभक्तों को दर्शन देने महाराज वहाँ थोड़ी देर रुके और फिर चलने तैयार हुए। तब हरिभक्तों ने महाराज को आग्रहपूर्वक कहाः 'महाराज ! ठाकुर को भोग लगाने का समय हुआ है, सो अभी रसोई बना देते हैं। आप खाना खाकर जाओ। परन्तु महाराज को कुछ जल्दी थी, सो कहाः 'जल्दी जाना है इसलिए रुकूंगा नहीं। खाने की जगह कुछ सूखा नाश्ता जैसा बना कर दे दो। हम साथ ले जायेंगे।'' हरिभक्तों ने तुरंत ही पौंक के लड्डू बनवाये। महाराज ने सब साधुओं तथा हरिभक्तों को एक-एक लड्डु दिया। मू.अ.मू. गुणातीतानन्दस्वामी को भी महाराज ने उनके हिस्से का लड्डु दिया।

स्वामिश्री ने तो अंतर में महाराज को अखंड धार रखा था, तब भी प्रगट मूर्ति का दर्शन करने की उन्हें तीव्र उत्कंठा हमेशा रहती थी....सदा महाराज की मूर्ति के दर्शन के ही प्यासे थे.....एक महाराज के ही दर्शन की तान थी। महाराज घोड़ी पर विराजमान थे....तो स्वामिश्री को यदि दर्शन करने हो तो घोड़ी के साथ-साथ उल्टे पाँव दौड़ना पड़े....अगर सीधे पाँव दौड़े तो महाराज की पीठ दिखाई पड़े। पर स्वामिश्री को महाराज की सौम्य मूर्ति का दर्शन करना था। दूसरी ओर महाराज की आज्ञा थी कि हमेशा जोड़ में जाना। इसलिए साथ में दौड़ने वाला साधु चाहिये। सो स्वामिश्री ने एक साधु को कहाः 'मेरे साथ तुम दौड़ो तो मैं अपने हिस्से का लड्डु तुम्हें दे दूँगा।' स्वामिश्री ने अपने हिस्से का लड्डु उस साधु को दे दिया व घोड़ी के सामने उल्टे पाँव महाराज के मुख का दर्शन करते-करते दौड़ने लगे। स्वामिश्री की यह अटूट श्रद्धा देखकर महाराज पूरे रास्ते मंद-मंद मुस्कराते हुए मूर्ति का सुख देते रहे।

सचमुच, स्वामिश्री की प्रीति कल्पना से परे की थी। मुख से केवल यही निकल पड़ता है—'धन्य-धन्य है गुणातीत को।'

एक बार सूरत में एक सेठ ने संतों को भोजन कराया व भेंट में हरेक संत को एक-एक रेशमी रूमाल दिया। रूमाल देखकर स्वामिश्री के मन में तुरन्त ही आयाः 'यह साधु के काम का नहीं, महाराज को देने जैसा है। ऐसा सोचकर अपनी झोली में वह रूमाल संभालकर रख दिया।

थोड़ा समय बीत गया। स्वामिश्री तो रूमाल की बात भूल भी गये।

एक बार गढ़डा में महाराज को खूब सर्दी (जुकाम) हुई। मोटे रूमाल से बार-बार नाक पोंछने से नाक लाल हो गई थी। तो महाराज बोलेः 'किसी के पास मुलायम पतला वस्त्र हो तो लाओ।'

स्वामिश्री को वह रेशमी रूमाल एकदम याद आया। स्वामिश्री तुरंत उठकर गये। झोली में से वह रूमाल लेकर आये व महाराज को दिया। ऐसा कीमती रूमाल देखकर महाराज ने आश्चर्य व्यक्त किया। सबके सामने उस रूमाल को खुला करते हुए महाराज बोले : 'अहो हो ! बम्बई व सूरत की बाजार में भी जो कीमती रूमाल नहीं मिले—वह हमारे साधु की झोली में से मिलता है।'

स्वामिश्री महाराज के इस वाक्य के अभिप्राय को समझ गये कि महाराज को यह पसन्द नहीं कि साधु होकर कीमती वस्तुओं का अपने पास संग्रह करे। उस दिन के बाद स्वामिश्री ने अपने लिये तो क्या, दूसरों के लिये भी कभी कोई कोमल वस्त्र या कीमती चीज अपने पास नहीं रखी।

हम अगर स्वामिश्री के स्थान पर होते तो हंसी मजाक में ही इस गहरी टकोर को टाल जाते। पर अभिप्राय समझकर वर्तने की हमारी दृष्टि हो जाये तो आज भी गुणातीत स्वरूपों हमें कोई कसर न रहने दें।

**—क्रमशः**

× × ×

# स्वामी की —बातें

141. भजन करते-करते क्रिया करें तो अन्तर में ठण्डक (शांति) रहेगी। अंतर में ठण्डक देखकर बड़े संत प्रसन्न होते हैं और जिस पर बड़े संत प्रसन्न हों उसका जीव सुखी हो जाता है।.... भगवान निरंतर कैसे प्रसन्न रहें? तो स्वामी बोले कि—जिसे भगवान को निरंतर राजी रखने हों उसे भगवान की आज्ञा का कभी भी भंग नहीं करना चाहिये और हमें जो भगवान का स्वरूप प्राप्त हुआ है इसके अतिरिक्त और कहीं सुख ढूंढने की इच्छा नहीं रखना व भगवान के सच्चे साधु का संग रखना। तो उस पर भगवान व साधु निरंतर प्रसन्न रहेंगे, इसमें कोई शंका नहीं।

प्र-3, 32

142. .....जिसे देखकर (संत की) छाती ठण्डी हो ऐसे गुण कैसे आवें?....ऐसे गुण तो आवें ही नहीं; चाहे कितना भी साथ में रहें, सेवा करें व कहें वैसा करा करें तब भी बड़े संत के गुण तो आवे ही नहीं। तब फिर हाथ जोड़कर पूछा कि—हे महाराज ! क्या उपाय किया जाये जिससे ऐसे गुण आयें? व वचनामृत में तो कई जगह लिखा है कि सत्पुरुष के गुण मुमुक्षु में आते हैं। तब स्वामी बोले कि—सत्पुरुष के गुण तो तब आते हैं—**जब ऐसे संत को निर्दोष समझे व सर्वज्ञ जाने और और उनके साथ किसी भी प्रकार का अंतराय नहीं रखे**—तब ही सत्पुरुष के गुण मुमुक्षु में आ पाते हैं। इसके बिना तो आ ही नहीं सकते। प्र-3, 34

143. महाराज यूं कहते थे कि दूसरे तो अभागे परन्तु यादव तो निरन्तर अभागे...जैसे महाराज हैं व जैसे यह साधु है....उन्हें जैसे हैं वैसे पहचान न पायें तो हम निरंतर अभागे हैं।.....

प्र-3, 35

144. 'सबसे अच्छा क्या है और सबसे बुरा क्या है? ....भगवान और इस साधु का जो संबंध हुआ है वह सबसे अच्छा है, इससे बढ़कर और कुछ नहीं व इससे अधिक और कुछ समझना नहीं है। सबसे बुरा क्या है? तो इस साधु के प्रति मनुष्यभाव आता है, इससे अधिक कुछ बुरा नहीं है.....मनुष्यभाव लोक, भोग, देह और पक्षपात के कारण आता है। इसमें 'पक्षपात' से जीव की जो अधोगति होती है वैसी तो पंचविषय से भी नहीं होती.... प्र-3, 36

145. आज तो सत्संग में भगवान प्रगट विराजमान हैं—वरन् बीस-बीस साल के युवान संसार छोड़कर कैसे चले आये? काम क्रोधादि तो इतने बलवान है कि शिव, ब्रह्मा आदि जैसों की भी लाज ली है.... प्र-3, 40

× × ×

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दि. | 5.3.90 | सोमवार | नवमी |
| 2. | दि. | 7.3.90 | बुधवार | एकादशी, व्रत, ब्र.स्व.प.पू. ककाजी का देहत्याग |
| 3. | दि. | 10.3.90 | सोमवार | पू.भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन, पूर्णिमा, होलिका दहन |
| 4. | दि. | 11.3.90 | रविवार | धूलेंडी, प.पू. साहेब का स्वर्ण जयंती महोत्सव, विधानगर में मनायेंगे |
| 5. | दि. | 23.3.90 | शुक्रवार | एकादशी, व्रत |

**PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,**
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032